विशेषण का दुःख

मुसाफिर बैठा

मुसाफिर बैठा 'करेला और नीम चढ़ा' यानी अच्छे हिंदी कवि होने के साथ-साथ दलित भी हैं तो मुझे यह कहने में कोई भय या संकोच नहीं है कि वह उत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ दलित कवि हैं और अब से उन्हें उसी तरह लिया-जाना जाए। अब, जिसका मुझे वर्षों से इंतजार था, मैं गर्व और आत्मविश्वास से मराठी में उनका नाम ले सकूंगा।

–विष्णु खरे

इस संग्रह की कविताएं गवाही देती हैं कि हिंदी की दलित कविता एक नये युग में प्रवेश कर रही है। अब यह सवर्णवाद के विरुद्ध तीव्र आक्रोश की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है, बल्कि समय और समाज की विसंगतियों को अपनी तरह से उजागर कर रही है, जरूरी सवाल उठा रही है, संवेदना के नये धरातल पर समानांतर सौंदर्य का सृजन कर रही है और ज्ञान के नये गवाक्ष खोल रही है।

–मदन कश्यप

978-93-87441-09-5

978-93-87441-09-5

₹ 130

The Marginalised Publication

eBook available

विभीषण का दुःख

मुसाफ़िर बैठा

विभीषण का दुःख

विभीषण का दुःख

मुसाफिर बैठा

The Marginalised Publication

राजभाषा विभाग (मंत्रिमंडल सचिवालय), बिहार सरकार
के अंशानुदान से प्रकाशित

प्रकाशक : द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन
इग्नू रोड, दिल्ली–110068
पंजीकृत कार्यालय, सानेवाड़ी, वर्धा
महाराष्ट्र–442001
ईमेल : themarginalised@gmail.com
संपर्क : +91–9650164016, 8130284314

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018
आईएसबीएन : 978–93–87441–09–5 (अजिल्द)
आईएसबीएन : 978–00–00 (सजिल्द)
आवरण, लेआउट : दिनेश कुमार
मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा
दिल्ली–110032
आवरण चित्र : इरफान अनवर
विभीषण का दुःख
लेखक : मुसाफिर बैठा

VIBHISHAN KA DUKH
by MUSAFIR BAITHA

समर्पित

महामानव
बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर
को

विषय-सूची

1.	कर्तव्य भर नफरत	11
2.	जुनूनी दशरथ मांझी	12
3.	डर में घर	14
4.	थर्मामीटर	15
5.	जनेऊ-तोड़ लेखक	16
6.	ब्रह्मेश्वर मुखिया	19
7.	पारम्परिक वासंतिक कवि एवं ऋतु छवि	21
8.	कमाई	23
9.	भय, भाग्य और भरोसा	24
10.	उघड़ा रंग	25
11.	जवाबदारी	26
12.	हत्या-अभ्यस्त अपराधी सा मुख मेरा	27
13.	बाजार में क्लीवेज	28
14.	जीवन देने के दांत	30
15.	निरुपाय हूँ	31
16.	कविता के अ-भाव से उपजी एक कविता	32
17.	लिख	34
18.	जमीर की खिसकी जमीन	35
19.	वक्ष स्थल से छलांग	36
20.	एक सुपर-डुपर बनिये का रफ कैरेक्टर-स्केच	37
21.	बेचना चाहता हूँ	39
22.	मैं धोबी संस्कृति समृद्ध	40
23.	मैं उनके मंदिर गया था	42

24.	नींद के बाहर	44
25.	अम्बेडकरवादी हाइकु	46
26.	रोहित वेमुला (हाइकु)	52
27.	महामना फुले (हाइकु)	54
28.	गर्जना दयनीय	57
29.	भूकम्प और डर	59
30.	राजा, जलजला और नवनिर्माण	61
31.	शुद्धता का नया पाठ	62
32.	बीज और विचित्रताओं पर कुछ बात	63
33.	वह	64
34.	तीन स्थितियाँ	65
35.	विष-नाभि की थाह में	66
36.	मैकाले की शान में और आदि इत्यादि	67
37.	बांसुरी में सुर असुर	68
38.	भूल सुधार	69
39.	देवता बनना चाहता हूँ	70
40.	बधाई का गणित	71
41.	संस्कार अभिनय का	72
42.	यथार्थ में मिथ मत फेंट	74
43.	हरिजन बनाम हरिजन	75
44.	छत्तीस का नाता	77
45.	चोट लोहार की	78
46.	उधार की धार	79
47.	खिलौना-गाड़ी	80
48.	बाबा साहेब अम्बेडकर	82
49.	कट्टरता	83

50. खिलाड़ी कवि 85
51. जीना तुम्हारा हमारा मरना 86
52. उसका दुःख 87
53. इसको सैल्यूट तो उसकी छिः छिः जरूरी 88
54. जननी-हाथ 89
55. कार्टून 90
56. जातमुखी मुखरी 91
57. तू ब्राह्मण जो है 92
58. सवर्णलोक का विकलांग 94
59. ऊ वाला वंशवाद ई वाला ना 96
60. माँ का अबोला 97
61. जाति जाती नहीं 100
62. सच की मिर्ची 101
63. डर, देह और दिमाग 102
64. काया 103
65. सोने की तरह डरना 104
66. घर में डर 105
67. अगम प्रेम 106
68. पाती व पते की बात 107
69. सुख का दुःख 108
70. सुख का मुकाबला 109
71. असली पंडित नकली पंडित 110
72. प्रेमचंद का हामिद बनता एक बच्चा 111
73. मित्र प्रसंग 113
74. विभीषण का दुःख 116

कर्तव्य भर नफरत

बहुत चली मुहब्बत की बातें उनकी ओर से
नफरतें उगाते रहे जमीं पर जबकि
वे भीतर बाहर लगातार

नफरतें पालीं उनने एकतरफा
हमारी तो पहुँच ही नहीं रही उन तक
कि उनके प्रति हम नफरत रखें अथवा प्रेम
सब कुछ तय होता रहा उनकी तरफ से
हमारी ओर से कुछ भी नहीं तो!
वे ही जज रहे हमारे मुजरिम भी जबकि वे ही

हममें नफरत करने का माद्दा कहाँ
हम तो बस, कर्तव्य भर
उनकी नफरतों के जवाब पर होते हैं!

जुनूनी दशरथ मांझी

एक मनुष्य द्वारा पहाड़ का ढाया जाना
मुखसुखदेह मुहावरे में ही संभव नहीं है केवल
जमीनी व्याप्ति भी हो सकती है
इस जैसे महाकर्म की
छूछे मिथक में ही रहे कोई भागीरथ
जलरास्ता निकालते हुए पर्वत से
यह भी जरूरी नहीं
झुठलाया जा सकता है इसे
मंझे मांझी-कर्म से

जरूरी नहीं कि आप
असंभव सी राह को कल्पना में ही रहे तलाशते
और यथार्थ में उसे संभव करने से
छिटककर कर लें दूर से ही प्रणाम
जैसे कि धरती पर समय समय पर आये
महापुरुषों को तो हम ओढ़ाते रहे हैं देवत्व व वंदन
जबकि उनके किये अपूर्व कार्यों कारनामों से
हम लेते हैं पल्ला झाड़
कि यह तो बस उनके ही बस की थी बात
हमने ईसा बुद्ध महावीर नानक जैसे महामानवों पर
देवत्व का मुलम्मा चढ़ा दिया
किया कबीर रैदास जैसे अपूर्व श्रमणों को भी
ऐसे ही चढ़ा किया अछू अश्लील ऊंचा
और अभी अभी आये अम्बेडकर को भी
उसी राह ले जा रहे हैं हम रखने

जीवन हौसले में है भागने में नहीं
किसी को अपनाना
उसके रास्ते चलने के प्रयासों में है
महिमामंडित करने मात्र में नहीं
अपने रथहीन जीवन से भी
हम मांझी बन सकें बन सकें सारथि
दशरथ मांझी की तरह
जीवन की एक खूबसूरती यह है।